बालिकाओं की प्रेरणा स्रोत

3

नारी सशक्तीकरण की साक्षात् प्रतिमूर्ति – कंचनलता सब्बरवाल*

आज़ादी के आंदोलन में देश के विभिन्न प्रदेशों से कई महिलाओं ने भाग लिया। इनमें से कुछ महिलाओं ने आज़ादी के बाद व्यवसाय के रूप में शिक्षण का चयन किया, ताकि कक्षाएँ जगायी जा सकें। बालिका शिक्षा की दिशा में भी ये निरंतर प्रयासरत रहीं। ऐसी ही दो महिलाओं के आज़ादी-आंदोलन के दौरान तथा बाद में शिक्षा के क्षेत्र में किए गए योगदान का विवरण यहाँ दिया जा रहा है। (यह अंश परिषद् द्वारा दिसंबर 2011 में प्रकाशित पुस्तक 'आलोक केंद्र है शिक्षक' से लिए गए हैं)

किसी भी प्रकार के अन्याय के विरूद्ध आवाज़ उठाने एवं नारे लगाने से श्रेष्ठ है उसके विरोध में स्वयं पहल की जाए। इस विश्वास पर प्रतिबद्ध डॉ. कंचनलता सब्बरवाल महिला सशक्तीकरण की जीवंत मिसाल हैं। 28 अगस्त, 1918 को दिल्ली में जन्मी डॉ. कंचनलता सब्बरवाल ने बारह वर्ष की अवस्था में बापू के निर्देश पर जीवन में कुछ कर दिखाने वाली नारी बनने का संकल्प ठानकर उच्च शिक्षा प्राप्त की। उन्होंने बापू के रचनात्मक कार्यक्रमों में सक्रिय भूमिका निभाकर स्वतंत्रता संग्राम में अपना अमूल्य योगदान दिया।

महिला कॉलेज, लखनऊ से सेवानिवृत्त होने के बाद शिक्षा एवं समाज सेवा के क्षेत्र में अभी भी सक्रिय, जीवन के पचीसी वसंत देख चुकीं, कंचनलता जी के व्यक्तित्व में दृढ़ता, साहस, कर्मठता एवं ममता का अनूठा सम्मिश्रण है।

यह अगस्त, 2002 की धूप-छाँह थी, जब मैं उनकी गृह सेविका की मदद से उनके ड्राइंग रूप में थी। डॉ. सब्बरवाल एक सरापा भारतीय महिला के रूप में आई और कहीं जाने की जल्दी के बावजूद मेरी जिज्ञासाओं के समाधान होने तक कुछ इस तरह बैठी रहीं, जैसे कि आज भी वे अपने कार्यालय में हों,

* परिषद् द्वारा प्रकाशित पुस्तक *'आलोक केंद्र हैं शिक्षक'* से

जिसमें बैठकर समूचे कॉलेज का कभी कुशल संचालन किया करती थीं। मेरे सवालों से उनकी यादें रील की तरह खुलने लगीं। मैंने पूछा, "आपने आज़ादी की जंग में भाग लिया है। आपसे ही आपके अनुभव सुनकर लिपिबद्ध करना चाहती हूँ। यह बताइए कि आपको स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने की प्रेरणा किससे मिली?" उन्होंने कहना शुरू किया–

"सन् 1930 की बात है। मैं दिल्ली में पढ़ती थी। बापू दिल्ली आए तो सरस्वती गदोलिया के यहाँ ठहरे। वहाँ एक सभा का आयोजन था। मैं भी अपने अभिभावक के साथ वहाँ गई। बापू का भाषण मैंने बहुत ध्यान से सुना। भाषण समाप्त होने के बाद मैं बड़े उत्साह के साथ बापू के पास गई और उनसे कहा, "बापू कुछ संदेश दीजिए।' बापू ने कहा, "देश को अपना समझो। आज देश को पढ़ी-लिखी जागरूक और कुछ कर दिखाने की भावना रखने वाली महिलाओं की आवश्यकता है, क्या तुम ऐसी ही एक महिला बनोगी?' मेरा जवाब था, "आपके आशीर्वाद से ज़रूर बनूँगी।' बापू ने मुझे आशीर्वाद देते हुए कहा, "ठीक है! तब आज से ही खादी पहनना शुरू कर दो। खादी केवल वस्त्र ही नहीं, बल्कि एक प्रकार की प्रार्थना है। यह एकाग्रचित होने की शक्ति देती है।' उनकी बात को मैंने गाँठ बाँध लिया।"

> *अच्छा शिक्षक बच्चों के लिए आदर्श नायक होता है। नायक-पूजा को देश-पूजा के साथ मिला दिया जाए तो बहुत अच्छा प्रभाव पड़ता है।*
>
> *कंचनलता सब्बरवाल*

"उस समय कितने साल की थीं?" मैंने पूछा।

"मैं उस समय 12-13 साल की थी। गांधी जी से हुई इस भेंट ने मेरी जिंदगी की धारा ही बदल दी। मेरे व्यक्तित्व में बदलाव आया। घर पहुँचते ही मैंने घोषणा कर दी, "आज से मैं खादी ही पहनूँगी।' उन दिनों खादी की साड़ी नहीं मिलती थी। जोड़ लगाकर हम साड़ी पहनते थे। हमारे घर पियर्स साबुन का इस्तेमाल होता था। एक दिन नानी ने व्यंग्य से कहा, "पहनेंगी खादी, लगाएँगी पियर्स सोप!' उस दिन के बाद से मैंने साबुन न लगाने की प्रतिज्ञा कर ली। बापू ने अपने भाषण में स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग के विषय में भी बड़ी प्रेरणादायक बातें कहीं थीं, जिनका मुझ पर गहरा असर हुआ था।"

> *स्वतंत्रता संग्राम में सहभागिता*
>
> - *1930 में गांधी जी से प्रेरित होकर देश सेवा का संकल्प लेकर उनके रचनात्मक आंदोलन में सक्रिय सहभागिता।*
> - *1930 में "सविनय अवज्ञा आंदोलन' में और 1942 के "भारत छोड़ो आंदोलन' में भागीदारी।*

"कौन-सी बातें थीं? कुछ बताइए न?"

"स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग पर बल देते हुए बापू ने कहा था, "स्वदेशी की रक्षा करना हमारा धर्म है। हम स्वदेशी का प्रयोग करें, तभी हमारे देश का उत्थान हो सकता है।' बापू के इस कथन ने मेरे मस्तिष्क में जड़ जमा ली। बापू का साहित्य मैंने पढ़ा। मैंने ठान लिया कि अपना देश, अपनी भाषा, अपना वेश ही हमारा

धर्म और कर्म है। इसलिए हमें स्वदेशी का प्रचार करना है और जनसामान्य में देशभक्ति की भावना को जाग्रत करना है।"

"आपने क्या-क्या कदम उठाए?"

"पहला काम था, हिंदी का प्रचार। विद्यालय में सारा काम अँग्रेजी में होता था। हम कुछ लड़कियाँ छिपकर पर्चों पर हिंदी में संदेश लिखती थीं। लड़के रात में इन पर्चों को दीवारों पर चिपकाते थे। दूसरा काम हमने किया, घर-घर जाकर खादी बेचने का। हम शराब की दुकानों पर जाते, शराब का सेवन करने वालों से उनके बाल-बच्चों के हित की बात करके इस लत को छोड़ने को कहते। पहले तो लोग क्रोधित होते थे, फिर हमारी बात मान जाते। इससे हमारा उत्साह बढ़ जाता।"

एक रौ में वे पुरानी स्मृतियाँ प्रस्तुत कर रही थीं, "बापू ने रचनात्मक कार्यों में महिलाओं को शामिल किया था। महिलाएँ धरना देने, स्वदेशी का प्रचार आदि कार्यों के द्वारा स्वतंत्रता आंदोलन में सहयोग दे रही थीं। बापू जानते थे कि धरना देने के लिए महिलाएँ आगे आएँ, तो सफलता अवश्य मिलेगी। क्योंकि नारी शक्ति का एक नैतिक प्रभाव पड़ता है। हम "कुमारी सभा' भी आयोजित करते थे। इसके अलावा.."

उन्हें बीच में ही टोककर मैंने पूछा, "कुमारी सभा क्या थी? इसमें कौन भाग लेता था?"

"यह सभा हमारे घर में होती थी। इसके माध्यम से हमने हिंदी का प्रचार किया। हम यही तर्क देते थे कि बिना अपनी भाषा के हम विश्व में अपनी पहचान नहीं बना सकते हैं। हमें हिंदी अपनानी ही होगी। इसी का प्रयोग करना होगा। कुमारी सभा के माध्यम से हम बालिकाओं में देशप्रेम की भावना उनमें जगाते थे, जागृति लाते थे। मैंने कविताओं के माध्यम से भी जागृति लाने का प्रयास किया-"वतन को प्यार करना अगर होती है बगावत, तो मैं भी एक बागी हूँ।' इस प्रकार के गीतों ने सबके दिलों में देशभक्ति, देश के प्रति आदर और स्वतंत्रता की भावना को भर दिया। स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग का प्रचार करते हुए हम गाते थे –

स्वदेशी की रक्षा करना हमारा धर्म है।

अपना देश, अपनी भाषा, अपना वेश ही कर्म है।

उन दिनों पत्र-पत्रिकाओं में आज़ादी के लिए संघर्ष करने वाले व्यक्तियों के संबंध में लेख छपते थे। ये लेख भी हममें जोश का संचार करते थे।"

"ऐसी किसी पत्रिका या लेख के बारे में कुछ बताइए।"

"पत्रिका 'चाँद' के लेखों ने हम सभी को बहुत प्रेरित किया। इसके 'फाँसी अंक' ने तो हमें झकझोरकर रख दिया था। हमारी ऑस्ट्रेलियन प्रिंसिपल थीं – श्रीमती एमेन्युल। वे गांधी और तिलक से बड़ी प्रभावित थीं। स्वयं खादी पहनती थीं। उनसे भी हमें प्रेरणा मिलती थी। तिलक के नारे 'स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है', से मुझे यह विचार बार-बार आया कि जन्मसिद्ध अधिकार के मायने क्या हैं। तिलक के इस नारे ने जन-जन में साहस एवं दृढ़ संकल्प का संचार किया। उन्हीं दिनों सुंदरलाल जी की किताब 'भारत में अंग्रेज़ी राज' पढ़ने का अवसर मिला। यह किताब ज़ब्त थी। हम रात को

छिपकर इसे पढ़ते। चिंतन-मनन के बाद यही लगा कि वास्तव में विदेशी शासक न तो भारत की आत्मा को पहचानता है और न ही इसे हमसे लगाव है। विदेशी शासन हटाना होगा। 1930 में 'सविनय अवज्ञा आंदोलन' में भाग लिया।"

"इस आंदोलन से जुड़ी कोई घटना सुनाइए!" मैंने आग्रह किया।

"घंटाघर में हम जुलूस निकाल रहे थे। पुलिस आई और हमें पकड़कर लॉरी में बैठाकर शहर से बाहर ले गई। कुछ देर बाद हम महिलाओं को वहीं छोड़ दिया। हम वहाँ से पैदल वापस लौटे। लेकिन मीलों पैदल चलकर, थककर चूर होने के बाद भी हमारे उत्साह में कोई कमी नहीं आई।"

आगे वे बोलीं, "इसी बीच सुभाष चंद्र बोस का भाषण सुना। नमक सत्याग्रह में गए। यह भावना बलवती होती गई कि "जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।' (मैंने देखा कि यह कहते हुए मातृभूमि के प्रति गौरव की भावना से उनका चेहरा दीप्त हो उठा था।) कमला देवी चट्टोपाध्याय, अरुणा आसफ अली और सरोजिनी नायडू का भी हम पर प्रभाव पड़ा। मैंने दिल्ली विश्वविद्यालय से दर्शनशास्त्र में एम.ए. किया और 1940 में इंदप्रस्थ कॉलेज में शिक्षिका बनी।"

"आपने शिक्षण कार्य का चयन क्यों किया?"

"मैं शिक्षिका बनकर बच्चों में देशप्रेम एवं देश के प्रति गौरव के संस्कार डालना चाहती थी। मेरा हमेशा यही प्रयास रहा कि विद्यार्थियों में राष्ट्रप्रेम, मातृप्रेम, भूमिप्रेम की भावना दृढ़ता से भर दूँ। छात्राओं को स्वतंत्रता हेतु कार्य करने के लिए प्रेरित करती थी।"

"शिक्षिका बनने के बाद बच्चों में देशप्रेम की भावना जाग्रत करने के लिए आपने क्या किया?"

"1942 में 'भारत छोड़ो आंदोलन' के दौरान हम झंडे बनाकर 10 पैसे में बेचते थे। इन झंडों पर लिखा होता था, "अंग्रेजों! भारत छोड़ो।' इन पैसों से हम जेल गए देशभक्तों के परिवार वालों की मदद करते थे। उन दिनों बंदियों के परिवार वालों की मदद करने से लोग डरते थे। हमारा दल इन परिवारों की हर तरह से देखभाल करता था। साथ ही हस्त-लिखित पत्रिका की कार्बन कॉपी बनाकर भी हम वितरित करते थे।"

"शिक्षिका बनने के बाद भी क्या आप बापू के रचनात्मक आंदोलन से जुड़ी रहीं?"

"हाँ! मैं बापू के रचनात्मक कार्यक्रमों, जैसे-अछूतोद्धार, महिला शिक्षा आदि के विषय में छात्राओं को जानकारी देती थी। उन्हें प्रेरित करती थी कि वे भी इन कार्यक्रमों में भाग लें। सभी छात्राएँ उत्साह से इन सब कार्यक्रमों में भाग लेती थीं। बिना किसी प्रकार के भेदभाव के हम सब मिलकर काम करते थे। उस समय लोगों में एकता की भावना थी। लड़कियों में साहस भी था। मैं हरिशचंद्र कॉलेज, लाहौर में प्रिंसिपल बनी। उस दौरान घटी एक घटना मुझे आज भी याद है जो साहस एवं एकता की अनूठी मिसाल है।"

"हमें भी उस घटना के बारे में बताइए," मैंने कहा।

शिक्षण एवं शैक्षणिक क्रियाकलाप –

- *1940 में इंद्रप्रस्थ कॉलेज, दिल्ली में शिक्षिका के रूप में नियुक्ति।*
- *हरिश्चंद्र कॉलेज, लाहौर में प्राचार्या के पद पर कार्यरत।*
- *1947 से लखनऊ में महिला कॉलेज की प्राचार्या।*

"हमारे छात्रावास में 250 लड़कियाँ थीं। शहर में सांप्रदायिक दंगे भड़के, तो मुझे किसी ने सलाह दी कि लड़कियों को अलग-अलग स्थानों में भेज दो।"

"फिर आपने क्या किया?"

"मैंने लड़कियों से यह कहा, तो उनका कहना था–"हम सब एक हैं, साथ रहेंगी और साथ ही मरेंगी! केवल धर्म के झगड़ों की खातिर अलग-अलग शरण लेकर नहीं रहेंगी।' लड़कियों की सुरक्षा के लिए रात को रेडक्रॉस की गाड़ी आई। उन्होंने कहा, "रात को छात्रावास पर हमला होने की आशंका है। हम पहरा देंगे।' हमने कहा, "खाना खा लो।' उन्होंने जवाब दिया, "हम खाना खाने नहीं, बहनों की रक्षा करने आए हैं।' तो ऐसी भावना थी लोगों में!"

"इस एकता की भावना का कारण क्या था?"

"एकता की प्रबल भावना का कारण उस समय की शिक्षा का प्रभाव था। शिक्षकों में एकता थी, लोगों में एकता थी, समाज में एकता थी। बालिकाओं में सशक्तीकरण की भावना शिक्षकों द्वारा भर दी गई थी। अगर रानी लक्ष्मीबाई लड़ सकती हैं, तो हम क्यों नहीं लड़ सकतीं–ऐसी भावनाएँ सब में थीं।"

अपने संस्मरण सुनाते हुए वे आगे बालीं, "1 जुलाई, 1947 को मैं लखनऊ आ गई। लखनऊ विश्वविद्यालय से 1947 में पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। हम सभी शिक्षक महान नेताओं के विषय में चर्चा करते थे। 1953 में लखनऊ में वर्किंग वूमेंस हॉस्टल खोला।"

"वर्किंग वीमेंस हॉस्टल खोलने के पीछे क्या खास उद्देश्य था?" मैंने पूछा।

"मुझे लगा कि हम महिलाओं के घर से बाहर निकलने की बात तो कहते हैं, परंतु दूसरे शहर में नौकरी मिलने पर उन्हें रहने के लिए सुरक्षित स्थान तो चाहिए ही। रहने के लिए सुरक्षित स्थान मिलेगा, तभी लड़कियाँ बाहर काम करने निकलेंगी। उनका आत्मविश्वास बढ़ेगा तथा आर्थिक निर्भरता भी उनमें आएगी।"

कंचनलता जी ने आगे बताया, "महिला कॉलेज में अपने कार्यकाल के दौरान मैं छात्राओं में देश प्रेम की भावना जाग्रत करती थी। स्वतंत्र होने के बाद भी मेरा यही प्रयास रहा कि अपनी छात्राओं में देश प्रेम के संस्कार डालूँ। मेरा दृढ़ विश्वास है कि शिक्षक चाहे तो सब कुछ कर सकता है। वह व्यक्तिगत गठन का कार्य करता है, लेकिन इसके लिए उसमें स्वयं क्षमता और प्रवृत्ति होनी चाहिए। आज कई बार बहुत से शिक्षक अपनी माँगें पूरी करवाने के लिए हड़ताल पर चले जाते हैं। शिक्षक को भी अपनी माँगें पूरी करवाने का हक तो है, परंतु बच्चों को वह पढ़ाएँ ज़रूर। शिक्षक का काम

एक पुजारी का काम है। अच्छी शिक्षा दें। इस कार्य में आएँ, तो समझें कि मैं शिक्षा मंदिर में भगवान का काम करने जा रहा हूँ। अहंकार एवं स्वार्थ छोड़कर अपने कर्त्तव्य में लगे रहें। अनुशासन 'स्व' होना चाहिए, 'पर' नहीं। राजाज्ञा होगी तो काम करेंगे, यह भावना निकालनी है। बच्चों के मन में अच्छे शिक्षक के प्रति काफी श्रद्धा होती है।

जिन्होंने महिलाओं को स्वतंत्रता आंदोलन से जोड़ा– स्वरूप कुमारी बक्शी

बाल्यावस्था में बापू के भाषण से प्रेरित हो आजीवन खादी धारण करने की प्रतिज्ञा कर, स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेकर, असंख्य महिलाओं को गांधी जी के रचनात्मक आंदोलन से जोड़नेवाली श्रीमती स्वरूप कुमारी बक्शी की जीवन गाथा देशप्रेम एवं समाज सेवा से ओतप्रोत है।

22 जून, 1919 को लखनऊ में जन्मीं तथा शिक्षिका के रूप में अपने केरियर की शुरुआत कर, उत्तर-प्रदेश के शिक्षा मंत्री पद को सुशोभित करने वाली श्रीमती बक्शी का दृढ़ विश्वास है कि शिक्षित महिला समाज का सशक्त स्तंभ है। इसीलिए महिलाओं की साक्षरता दर में वृद्धि उनके जीवन का लक्ष्य रहा।

जीवन के 85 वर्ष पार कर श्रीमती बक्शी अभी भी समाज सेवा में रत हैं। उनसे मिलना यह विश्वास जगाता है कि महिला सशक्तीकरण के लिए स्वयं महिला को ही कदम उठाना होगा।

श्रीमती बक्शी से मिलने जब मैं उनके लखनऊ स्थित आवास पर पहुँची, तो बरामदे में एक मासूम नन्ही बालिका खड़ी थी। मुझे देखते ही बालिका ने पूछा, "आप किससे मिलने आई हैं?"

> *पढ़ी-लिखी महिला ही परिवार-समाज में जागृति ला सकती है।*
>
> *– स्वरूप कुमारी बक्शी*

"तुम से" हँसते हुए मैंने कहा ।

"नहीं! मुझे मालूम है! आप नानी से मिलने आई हैं। आप नानी का इंटरव्यू लेंगी?"

"तुम्हें कैसे मालूम?" मैंने बालिका से पूछा।

"नानी जी से इंटरव्यू लेने कोई न कोई आता ही रहता है। मैं भी इंटरव्यू सुनूँगी।"

"हाँ! हाँ!!, तुम भी सुनना। अच्छा, पहले यह तो बताओ तुम्हारा नाम क्या है?" बालिका से बातें करना मुझे अच्छा लग रहा था।

"गौरी! अभी नानी को बुलाती हूँ, कहती हुई वह अंदर चली गई।"

कुछ ही देर में दुबली-पतली, छोटे कद की गौरवर्णा श्रीमती स्वरूप कुमारी बक्शी ने कक्ष में प्रवेश किया। मैंने उन्हें नमस्कार किया।

पास ही रखे सोफे पर बैठकर मुझे बैठने का संकेत कर वे बोलीं, "आज राजभवन में स्वतंत्रता दिवस का कार्यक्रम था। सुबह वहाँ गई थी।" फिर आज़ादी के दौर को याद करते हुए उन्होंने कहा, "आज की पीढ़ी को भान ही नहीं है कि कितने संघर्षों के बाद यह आज़ादी हमें मिली है।"

"आज़ादी की लड़ाई में आपने सक्रिय भूमिका निभाई है। आपको इसमें भाग लेने की प्रेरणा कहाँ से मिली?"

"बचपन से ही मुझ में देश-प्रेम के संस्कार आ गए थे। 1929 में लाहौर में काँग्रेस का वार्षिक अधिवेशन हुआ था। गांधी जी भी आए थे। वहाँ पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त करने के संबंध में प्रस्ताव पारित हुआ था। अपने परिवारजनों के साथ मैं भी वहाँ गई थी। मुझे अभी भी याद है, गांधी जी मंच पर बैठे चरखा कात रहे थे। उनके भाषण और सुबह की प्रार्थना से मैं प्रभावित हुई थी। घर लौटने पर प्रतिज्ञा कर ली कि मैं खादी पहनूँगी। हमारे परिवार ने भी विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार किया।"

स्वतंत्रता संग्राम में सहभागिता

- *बाल्यावस्था से ही गांधी जी के रचनात्मक आंदोलन से जुड़ीं।*
- *सन् 1942 में "भारत छोड़ो आंदोलन' में स्वयं भाग लिया और लखनऊ में अनेक महिलाओं को आज़ादी के आंदोलन में भाग लेने के लिए प्रेरित किया।*
- *"भारत छोड़ो आंदोलन' के दौरान गिरफ्तार हुईं और महिला बंदी गृह, लखनऊ में 26 दिन तक बंदी रहीं।*

"उस समय आपकी उम्र क्या थी?"

"मैं दस वर्ष की थी।"

"दस वर्ष की अल्पायु में आपने स्वतंत्रता आंदोलन में किस प्रकार भाग लिया?"

"हम जुलूस में अपने परिवार के बड़े सदस्यों के साथ शामिल हो नारे लगाते थे। स्वदेशी का प्रचार करते और प्रयाण गीत गाते हुए जुलूस निकालते थे। बापू के साथ ही पं. नेहरू के विचारों सें भी मैं प्रभावित थी। उन दिनों पत्र-पत्रिकाओं में भी आज़ादी और इसके संघर्ष से जुड़े लोगों के संबंध में लेख छपते थे। 'चाँद' पत्रिका में छपे क्रांतिकारियों से संबंधित लेख मुझे विचलित कर रहे थे। इसके 'फाँसी अंक' में छपे लेखों ने मुझे झकझोरकर रख दिया था। यह पत्रिका ज़ब्त हो गई थी। 1940 में मेरा विवाह हुआ। हम लखनऊ आ गए।"

"विवाह के बाद स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने के कारण आप पर किसी प्रकार की पाबंदी लगी?" मैंने पूछा।

"नहीं, मैं भाग्यशाली थी कि विवाह के बाद पति राजकुमार बक्शी के यहाँ भी देशभक्ति से परिपूर्ण वातावरण मिला। लखनऊ में मेरी सास धनराजपति बक्शी ने भी स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय रूप से भाग लिया था तथा साइमन कमीशन के विरुद्ध आंदोलन में लखनऊ में उन पर फिरंगी पुलिस की लाठियों की मार भी पड़ी थी। पं. नेहरू हमारे घर आए, तो उन्होंने मृदुला साराभाई से कहा, "बहू को सिटी काँग्रेस का मेंबर बना दो।' इस प्रकार हम काँग्रेस के सदस्य बन गए। 1942 में मेरे ससुर के बड़े भाई डॉ. मदन अटल के साथ हम बंबई जाकर

अखिल भारतीय काँग्रेस के महाधिवेशन में सम्मिलित हुए। इसके पश्चात् देश के लिए कुछ करने की भावना और भी बलवती हो उठी।"

"फिर आपने क्या किया? काँग्रेस की सदस्य बनने के बाद तो आपकी गतिविधियाँ बढ़ गई होंगी।" मैंने श्रीमती बक्शी के काँग्रेस का सदस्य बनने के बाद के क्रियाकलाप जानने चाहे।

"वहाँ से लखनऊ लौटकर 'भारत छोड़ो' आंदोलन में भाग लिया। सहयोगी बालिकाओं के साथ कान्यकुब्ज विद्यालय, महिला महाविद्यालय तथा अन्य कई विद्यालयों में आंदोलन किए तथा हड़तालें आयोजित कीं। गली-गली और घर-घर में महिलाओं में स्वतंत्रता संग्राम से संबंधित घोषणा-पत्र वितरित किए और आंदोलन में भाग लेने के लिए उन्हें प्रेरित किया।"

"महिलाओं को स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने के लिए आप किस प्रकार प्रेरित करती थीं?"

"महिलाओं को बापू के रचनात्मक कार्यों के बारे में बताकर प्रेरित करती थी। उन्हें बताती थी कि बापू महिलाओं को कितनी बड़ी शक्ति मानते हैं। बापू को नारी शक्ति पर कितना विश्वास है, यह जानकर कई महिलाएँ मेरे साथ जुड़ गईं।'

"आप सब महिलाएँ क्या-क्या कार्य करती थीं?" महिलाओं द्वारा आज़ादी की लड़ाई में भाग लेने के विषय में जानकारी प्राप्त करने को मैं उत्सुक हो रही थी।

"हम प्रमुख रूप से बापू के रचनात्मक आंदोलन से जुड़े थे। पर्चे बनाते, जेल में बंद स्वतंत्रता सेनानियों के परिवारों की आर्थिक सहायता करते तथा मदिरा एवं विदेशी वस्त्रों की दुकानों पर धरने देते थे। इस पर लखनऊ की फिरंगी पुलिस ने मेरे निवास को चारों ओर से घेरकर मुझे बंदी बना लिया था।"

"आप कितने दिन बंदी रहीं?"

"मैं लखनऊ महिला बंदी गृह में 25-26 दिन तक बंदी रही। महिला जेल लखनऊ की बैरक में मेरे साथ उस समय श्रीमती शिवराजवती नेहरू, श्रीमती शांता वैद्य तथा श्रीमती त्रिपाठी भी बंदी थीं। वहाँ हमारे साथ अत्यंत कठोर व्यवहार होता था। हम अपने परिवारजनों से भी नहीं मिल सकते थे। हमारी पुस्तकें भी हमसे छीन ली गई थीं। समाचार पत्रों पर भी रोक लग गई थी। लेकिन जेल से छूटने के बाद भी हम जुलूस निकालते थे। हम यही गाते थे –

प्राण वीरों भले गँवाना,
पर न झंडा नीचे गिराना।"

गीत गाते हुए वही जोश श्रीमती बक्शी के स्वर में उभर आया था। मैं और उनकी नातिन गौरी मनोयोग से उनकी बातें सुन रहे थे।

"और क्या-क्या कार्य आप लोग करते थे?"

"मंदिरों में अछूतों को प्रवेश दिलवाते थे। दहेज के खिलाफ लोगों में चेतना जगाते थे।"

"मैंने सुना है कि आज़ादी की लड़ाई के दिनों में ही आपने लखनऊ में श्रमिकों की बस्ती में भी काम किया था।"

"1942 में श्रमिकों की बस्ती में काम किया। स्कूल भी खोला। बस्ती की महिलाएँ चाहती थीं कि उनके बच्चे पढ़ें। 1943-44 में

मैंने 'चुटकी भंडार' (एक विद्यालय), हुसैनगंज में पढ़ाया। 1946 में नारी शिक्षा निकेतन लखनऊ में प्रवक्ता के रूप में नियुक्ति हुई। मैं बालिकाओं को देशभक्त क्रांतिकारियों तथा अन्य स्वतंत्रता सेनानियों के विषय में बताकर प्रेरित किया करती थी। हमारी संस्था का वातावरण ही देशभक्तिमय हो गया था। देश 1947 में आज़ाद हो ही गया।"

_शिक्षण एवं शैक्षणिक क्रियाकलाप_

- *1942 में लखनऊ में श्रमिकों की बस्ती में स्कूल खोला और बच्चों को पढ़ाया।*
- *1943-44 में "चुटकी भंडार' (एक विद्यालय), हुसैनगंज में पढ़ाया।*
- *नारी शिक्षा निकेतन, लखनऊ में 1946 में प्रवक्ता के रूप में नियुक्त।*
- *1951 में, इसी संस्था की प्राचार्या बनीं। 1979 तक कार्यरत रहीं।*
- *अपने कार्यकाल में बालिकाओं के नामांकन में वृद्धि की।*

"आज़ादी का दिन आपने कैसे मनाया?"

"आज़ादी के दिन हम सब बहुत खुश थे। चारों ओर किसी त्योहार का-सा माहौल था। मिठाइयाँ बाँटी जा रही थीं।" आज़ादी का दिन याद करते हुए श्रीमती बक्शी के चेहरे पर एक उल्लास-सा छा गया था।

"आपने बताया कि नारी शिक्षा निकेतन में पढ़ाते वक्त आप छात्राओं में देशप्रेम की भावना जगाने का हर संभव प्रयास करती थीं। आज़ादी प्राप्त करने के बाद भी क्या विद्यार्थियों में देशप्रेम का भाव जगाने के लिए आपके प्रयास जारी रहे?"

"हाँ! आज़ादी कठिन संघर्ष के बाद मिली थी। इसे बनाए रखने के लिए ज़रूरी है कि हमारी आनेवाली पीढ़ी स्वतंत्रता का मूल्य जाने। इसी उद्देश्य से हम बच्चों में देशप्रेम, देश के प्रति निष्ठा की भावना विकसित करने की हर संभव कोशिश करते थे। बच्चों में देशप्रेम की भावना जाग्रत करने के साथ ही मेरा यह भी प्रयास रहता था कि बच्चों को अपने देश की संस्कृति, राष्ट्रीयता के विषय में भी बताया जाए।"

"इसके लिए आपकी दृष्टि में क्या-क्या प्रयास होने चाहिए?"

"बच्चों को मैं अपनी संस्कृति की जानकारी मात्र उपदेशों द्वारा नहीं बल्कि कथा-कहानी एवं चर्चाओं के द्वारा देती थी। मेरा यह विचार है कि बच्चों में मूल्यों के विकास हेतु शिक्षक स्वयं उदाहरण प्रस्तुत करे।"

आगे वे बोलीं, "बच्चे अध्यापक को अपना आदर्श मानते हैं। उसका और शिक्षक का संबंध जीवनपर्यंत बना रह सकता है। प्रत्येक शिक्षक को अपने मन एवं मस्तिष्क में यह बात दृढ़ कर लेनी है कि उसका काम बड़ा ही महत्वपूर्ण एवं चुनौतियों से भरा है। उसके सामने एक बड़ी चुनौती है, बच्चे के व्यक्तित्व-निर्माण की। उसके पास बच्चा एक कोरी स्लेट की तरह आया है, जिस पर संस्कार, मूल्य आदि सभी अंकित करने हैं। बचपन में अच्छे मूल्य और संस्कार बच्चे में डाल दिए जाएँ, तो वे जीवनपर्यंत बने रहेंगे। बाल्यावस्था में जो संस्कार दिए जाते हैं, वहीं बड़े होकर पल्लवित एवं

पुष्पित होते हैं। बचपन में देश के प्रति प्रेम एवं भक्ति हृदय में जाग्रत हो गई, तो वह दिनोंदिन वृद्धि को ही प्राप्त होगी। विद्यालय में स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने वाले महापुरुषों के चित्र दीवार पर लगवाएँ। बच्चों को सामुदायिक गीत सिखाएँ।"

"एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा भी सामुदायिक गान के कार्यक्रम से परस्पर सद्भाव बढ़ता है। अच्छा हो तो विद्यालयों में प्रतिदिन सुबह प्रार्थना के समय एक गीत सामुदायिक हो। इससे परस्पर सद्भाव बढ़ेगा।"

"सामुदायिक गान के अतिरिक्त और कौन-कौन से क्रियाकलाप विद्यालयों में होने चाहिए?"

"पाठ्येतर क्रियाकलापों में वाद-विवाद, भाषण आदि में ऐसे विषय रखें, जिनसे विद्यार्थियों के ज्ञान में तो बढ़ोतरी हो, साथ ही देशप्रेम, श्रम, सद्भाव आदि मूल्यों का भी विकास हो। देशभक्ति एवं महापुरुषों से संबंधित फिल्में बच्चों को दिखाई जा सकती हैं। आज़ादी के बाद सभी राष्ट्रीय पर्व हम धूमधाम से मनाते थे। इनके माध्यम से रुचिकर ढंग से बच्चों में देशभक्ति की भावना उत्पन्न की जा सकती है। प्रत्येक शिक्षक का यही प्रयास होना चाहिए कि कितनी भी कठिनाइयाँ क्यों न आएँ, अपने बच्चे के व्यक्तित्व निर्माण के दायित्व में तनिक भी कसर न छोड़ें। बच्चों में सत्यनिष्ठा, देशप्रेम, परस्पर सद्भावना आदि मूल्य विकसित कर दिए, तो समझिए कि शिक्षक ने अपनी भूमिका सार्थक कर दी। हम सभी यह मानते हैं कि समाज की उन्नति के लिए महिलाओं का साक्षर होना बहुत ज़रूरी है। पढ़ी-लिखी महिला ही परिवार और समाज में जागृति ला सकती है।"

"बालिकाएँ अधिक-से-अधिक संख्या में स्कूल आएँ इसके लिए आपने क्या प्रयास किए?"

"1951 में प्राचार्या बनने के बाद मेरा यही प्रयास रहा कि अधिक-से-अधिक संख्या में स्त्रियाँ साक्षर हों। पहले जहाँ हमारे विद्यालय में मात्र 50 छात्राएँ थीं, मेरे कार्यकाल में 5000 हो गईं। शिक्षा मंत्री बनने के बाद भी बालिका शिक्षा पर मैंने विशेष रूप से ध्यान दिया। बालिकाओं को अधिक-से-अधिक संख्या में विद्यालय लाना है। उन्हें बाल्यावस्था से ही किसी कार्य को करने का समान अवसर देकर उनमें आत्मविश्वास जाग्रत करना है। उनमें निर्णय लेने की क्षमता का विकास करने का दायित्व शिक्षक का ही है, ताकि बड़ी होकर वे विवेकपूर्ण निर्णय ले सकें तथा किसी भी परिस्थिति का सामना कर सकें। बालिकाओं में देशप्रेम और निष्ठा की भावना विकसित कर दी गई, तो समझिए कि आनेवाली कई पीढ़ियों को देशभक्ति के संस्कार दे दिए गए। महिला शक्ति बहुत कुछ कर सकती है। यह अनेक बार विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत महिलाओं ने सिद्ध कर दिखाया है। बस ज़रूरत है, उन्हें समान अवसर देकर उनमें आत्मविश्वास जाग्रत करने की।"

नन्ही गौरी पास ही बैठी हमारी बातें ध्यान से सुन रही थी। मैंने उससे पूछा, "तुम बड़ी होकर क्या बनोगी?"

गौरी गर्व से बोली, "देश की सेवा करूँगी। फिर सब लोग नानी के समान मेरा भी इंटरव्यू लेने आएँगे।"

"आजकल आप क्या कर रही हैं?" मैंने श्रीमती बक्शी से पूछा!

"समाज सेवा के अलावा समय मिलने पर लेखन कार्य करती हूँ", कहते हुए वे उठीं और पास ही के शेल्फ से अपनी एक पुस्तक "स्वरूप कुमारी बक्शी की प्रतिनिधि कहानियाँ' निकालकर मुझे दी। इस कहानी संग्रह में उनकी सन् 1947 से 1997 के बीच लिखी गई चौदह कहानियाँ छपी हैं।

रचनाएँ

नाटक संग्रह – *मैं मायके चली जाऊँगी, चुनाव की घुड़दौड़।*
कहानी संग्रह – *कौड़ियों का नाच।*
काव्यक संग्रह – *अनंत का पंछी, अनंत की नौका, ज्योति पंख।*

श्रीमती बक्शी से मैंने उनका फोटो माँगा, तो गौरी तपाक से बोली, "नानी, वही वाली फोटो दीदी को दीजिए, जो आपकी किताब में छपी है।" जब तक नानी कुछ बोलतीं, गौरी ने पास रखी फाइल खोली और फोटो निकालकर मुझे दे दी।

श्रीमती बक्शी आज़ादी के दिनों के जीवंत अध्याय की तरह हैं, जिनमें अब भी देशभक्ति की भावना और नयी पीढ़ी को प्रेरित करने का सामर्थ्य है।